महाकवि गुलाब खंडेलवाल
साहित्यिक उपलब्धियों के बढ़ते हुए चरण

लेखिका -- प्रतिभा खंडेलवाल

महाकवि गुलाब खंडेलवाल का जन्म अपने ननिहाल राजस्थान के शेखावाटी प्रदेश के नवलगढ़ नगर में २१ फरवरी सन् १९२४ ई. को हुआ था. उनके पिता का नाम श्री शीतलप्रसाद तथा माता का नाम श्रीमती वासंती देवी था. उनके पिता के अग्रज रायसाहब सुरजूलालजी ने उन्हें गोद ले लिया था. उनके पूर्वज राजस्थान के मंडावा से बिहार के गया में आकर बस गए थे. कालान्तर में गुलाबजी प्रतापगढ़, उ. प्र. में कुछ वर्ष बिताने के पश्चात् अब अमेरिका
के ओहायो प्रदेश में रहते हैं तथा प्रतिवर्ष भारत आते रहते हैं.

श्री गुलाब खंडेलवाल की प्रारम्भिक शिक्षा गया(बिहार) में हुई तथा उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से १९४३ में बी. ए. किया. काशी विद्या, काव्य और कला का गढ़ रहा है. काशी में रहने के दौरान गुलाबजी 'बेढब बनारसी' के संपर्क में आये तथा उस समय के साहित्य-महारथियों के निकट आने लगे. वे वय में कम होने पर भी उस समय के साहित्यकारों की एकमात्र संस्था 'प्रसाद-परिषद्' के सदस्य बना लिए गये जिससे उनमें कविता के संस्कार पल्लवित हुए.

साहित्य-गोष्ठियों में वे सर्वश्री 'बेढब बनारसी', मैथिलीशरण गुप्त, 'निराला', बाबू श्यामसुंदर दास, पं. रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी, राय कृष्णदास, पं. सीताराम चतुर्वेदी, आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी, पं. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' आदि से मिलने के अवसर पाने लगे. वे इन गोष्ठियों में कविता सुनाते तो गुरुजन-

मंडली उन्हें शुभाशीष से सींचती.

अपनी कविताओं से वे लोकमानस को अपनी ओर आकर्षित करने लगे. धीरे-धीरे उनकी साहित्यिक मित्रमंडली तथा शुभचिंतकों का दायरा बढ़ने लगा. सर्वश्री हरिवंश राय 'बच्चन', सुमित्रानंदन पन्त, महादेवी वर्मा, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', डॉ. रामकुमार वर्मा, न्यायमूर्ति महेश नारायण शुक्ल, आचार्य विश्वनाथ सिंह, माननीय गंगाशरण सिंह, श्री कामता प्रसाद सिंह, श्री शंकर दयाल सिंह आदि इनके दायरे में आते गये.

मित्र मंडली में काश्मीर के पूर्व युवराज डॉ. कर्ण सिंह, डॉ. शम्भुनाथ सिंह, आचार्य विश्वनाथ सिंह, डॉ. हंसराज त्रिपाठी, डॉ. कुमार विमल, प्रो. जगदीश पाण्डेय, प्रो. देवेन्द्र शर्मा, श्री विश्वंभर 'मानव', श्री त्रिलोचन शास्त्री, श्री केदार नाथ मिश्र 'प्रभात', श्री भवानी प्रसाद मिश्र, श्री नथमल केडिया, श्री शेषेन्द्र शर्मा एवं श्रीमती इंदिरा धनराज गिरि, डॉ. राजेश्वर सहाय त्रिपाठी, पं. श्रीधर शास्त्री, पं. विद्यानिवास मिश्र, श्री अर्जुन चौबे काश्यप आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं.

पूर्ववर्ती व्यक्तित्व का प्रभाव

१. तुलसीदास

२. शेक्सपीयर

३. कबीर

समकालीन व्यक्तित्व का प्रभाव

१. काव्यगुरू नारायणानंद सरस्वती

२. कवीन्द्र रवीन्द्र

३. महात्मा गांधी

४. निराला

महाकवि गुलाब खंडेलवाल को देश-विदेश में मिला सम्मान

गुलाबजी पिछले २० वर्षों से अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मलेन (प्रयाग) के अध्यक्ष हैं जिस पद पर वे छठी बार निर्विरोध चुने गये हैं.

वे International Hindi Samity America तथा भारत की सुप्रसिद्ध संस्था 'भारती परिषद्' के भी अध्यक्ष हैं.

भारत

१. १९७९ में उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मलेन ने उन्हें सम्मानित किया.

२. १९८९ में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मलेन, प्रयाग ने तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. रामकुमार वर्मा के कर-कमलों द्वारा उन्हें **'साहित्य-वाचस्पति'** की सर्वोच्च उपाधि से सम्मानित किया गया.

३. १९९७ में **'भक्ति-गंगा'** तथा **'तिलक करें रघुबीर'** का उदघाटन **माननीय राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा** के कर-कमलों द्वारा हुआ.

४. २००१ में इटावा में **श्री मुरारी बापू, उत्तर प्रदेश के तत्कालीन गवर्नर श्री विष्णुकांत शास्त्री, पूर्व अटर्नी जनरल श्री शांतिभूषण तथा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव** -- चारों ने मिलकर गुलाबजी को सम्मानित किया जिसपर मुरारी बापू ने कहा, "आज धर्म, शासन, राजनीति और क़ानून ने एक साथ आपको सम्मानित किया है."

अमेरिका

१. काव्यसम्बंधी उपलब्धियों के लिए उन्हें बाल्टीमोर नगर की **'मानद नागरिकता'** (Honorary Citizenship) १९८५ में दी गयी.

२. ६ दिसंबर १९८६ में राजधानी वाशिंग्टन डी. सी. में **'विशिष्ट कवि'** के रूप में उन्हें सम्मानित किया गया. उक्त दिवस को मेरीलैंड के गवर्नर ने सम्पूर्ण मेरीलैंड राज्य में तथा बाल्टीमोर के मेयर ने बाल्टीमोर नगर में **'हिन्दी-दिवस'** घोषित किया.

३. अमेरिका की राजधानी **वाशिंग्टन डी. सी.** में अमेरिका और भारत के सम्मिलित तत्त्वाधान में २६ जनवरी २००६ को आयोजित गणतंत्र-दिवस समारोह में मेरीलैंड के गवर्नर द्वारा उन्हें **'कवि-सम्राट्'** की उपाधि से अलंकृत किया गया.

महाकवि गुलाब खंडेलवाल के काव्य पर हुए कुछ शोध

गुलाब खंडेलवाल के काव्य पर सर्वप्रथम एम. ए. का शोध-निबंध मगध विश्वविद्यालय से मुकुल खंडेलवाल ने प्रस्तुत किया. तत्पश्चात् दो शोध-निबंध अवध विश्वविद्यालय से हुए.

गुलाबजी की सतत गतिशील काव्यधारा की नित नव निर्मित होती रचनाधर्मिता की साथ-साथ विश्वविद्यालयों में भी उनके साहित्य पर पी. एच. डी. के लिए समय-समय पर शोध किये जा रहे हैं. अब तक विभिन्न विश्वविद्यालयों में हुए शोध-प्रबंधों पर निम्नलिखित विद्यार्थियों को पी. एच. डी. की उपाधि प्रदान की गयी.

1. **सागर विश्वविद्यालय**, मध्य प्रदेश से यशवंत सिंह को १९६६ में
   -- 'हिन्दी के वादमुक्त कवि'

2. मगध विश्वविद्यालय, बिहार से रवीन्द्र राय को १९८५ में

--'कवि गुलाब खंडेलवाल: व्यक्तित्व और कृतित्व'

3. मेरठ विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश से विष्णुप्रकाश मिश्र को १९९२ में

--'कवि गुलाब खंडेलवाल: जीवन और साहित्य'

4. रूहेलखंड विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश से पूर्ती अवस्थी को १९९४ में

-- 'कवि गुलाब खंडेलवाल के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन'.

5. महात्मा ज्योतिबा फुले विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश से स्नेहकुमारी कनौजिया को २००६ में

--'गुलाब खंडेलवाल के साहित्य का शास्त्रीय अध्ययन'

6. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरयाणा से डॉ. रमापति सिंह के निर्देशन में २००८ में -- 'गुलाब खंडेलवाल: व्यक्तित्व और कृतित्व'

7. अवध विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश से सुश्री अंकिता मिश्रा को २०११ में – 'कविश्री गुलाब खंडेलवाल की काव्यदृष्टि'

ये शोध उनके समग्र साहित्य पर हुए हैं. गुलाबजी का काव्य-संसार बहुत विशाल है. अब आवश्यकता है की उनके ग़ज़ल-साहित्य, भक्ति-काव्य, गीति-काव्य, प्रबंध-काव्य, प्रसंगगर्भत्व, छंदविधान, भाषा-प्रयोग, नाट्य-साहित्य, नूतन प्रयोग आदि पर अलग-अलग शोध किये जायँ तभी उनके साथ न्याय हो सकता है.

महाकवि गुलाब खंडेलवाल की कुछ काव्य-पुस्तकें **महाविद्यालयों के शिक्षण-पाठ्यक्रमों में भी रह चुकी हैं** जो इस प्रकार हैं --

१. **आलोकवृत्त** -- खंडकाव्य -- १९७६ से उत्तर प्रदेश में इंटर मीडिएट बोर्ड के पाठ्यक्रम में स्वीकृत है.

२. **उषा** -- महाकाव्य -- मगध विश्वविद्यालय के बी. ए. के पाठ्यक्रम में १९६८ से कई वर्षों तक रहा.

३. **कच-देवयानी** -- खंडकाव्य --मगध विश्वविद्यालय के बी. ए. के पाठ्यक्रम में था.

४. **आलोकवृत्त** - खंडकाव्य -- मगध विश्वविद्यालय के बी. ए. के पाठ्यक्रम में १९७६ से है.

गुलाबजी के काव्य पर मिले विभिन्न पुरस्कार

गुलाबजी की छ; पुस्तकें उत्तर प्रदेश सरकार के हिन्दी-संस्थान द्वारा पुरस्कृत हुईं, एक पुस्तक बिहार सरकार तथा एक पुस्तक बंगाल की एक साहित्यिक संस्था द्वारा पुरस्कृत हुई.

१. **उषा** (महाकाव्य) -- **उत्तर प्रदेश** द्वारा पुरस्कृत, १९६७ में

२. **रूप की धूप** -- **उत्तर प्रदेश** द्वारा पुरस्कृत, १९७१ में

३. **सौ गुलाब खिले** -- **उत्तर प्रदेश** द्वारा पुरस्कृत, १९७५ में

४. **कुछ और गुलाब** -- **उत्तर प्रदेश** द्वारा पुरस्कृत, १९८० में

५. **अहल्या** (खंडकाव्य)-**उत्तर प्रदेश द्वारा 'विशिष्ट पुरस्कार'**, १९८० में

६. **अहल्या** (खंडकाव्य) **--श्री हनुमान मंदिर ट्रस्ट, कलकत्ता**
'अखिल भारतीय राम भक्ति पुरस्कार', १९८४ में

७. **आधुनिक कवि, १९** -- बिहार सरकार द्वारा साहित्य संबंधी
'अखिल भारतीय ग्रन्थ पुरस्कार'

८. **हर सुबह एक ताज़ा गुलाब** -- उत्तर प्रदेश द्वारा
'निराला पुरस्कार' १९८९ में

मौलिक साहित्यिक कार्य

गुलाबजी आजीवन अपनी मौलिक उद्भावनाओं से भारती के भण्डार को समृद्ध करते रहे हैं. उन्होंने अपना लक्ष्य यही निर्धारित किया है –

"गंध बनकर हवा में बिखर जायँ हम
ओस बनकर पँखुरियों से झर जायँ हम
तू न देखे हमें बाग़ में भी तो क्या
तेरा दामन तो खुशबू से भर जायँ हम"

साहित्य के क्षेत्र में गुलाबजी के अवदान को नकारा नहीं जा सकता. उनका यह अवदान दो प्रकार का है. एक ओर तो उन्होंने उत्कृष्ट साहित्य की रचना की है दूसरी ओर आनेवाली पीढ़ियों केलिये पगडंडियाँ बना कर छोड़ी है. वे काव्य की अनेक विधाओं के प्रथम प्रणेता रहे हैं जिनका संक्षेप में उल्लेख इस प्रकार है –

१. दोहा -- दोहा बहुत पुराना छंद है किन्तु आधुनिक हिन्दी में बिहारी के जैसे श्रृंगार के तथा डिंगल कवि सूर्यमल्ल के जैसे वीर रस के दोहे सर्वप्रथम गुलाबजी ने ही प्रस्तुत किये. उच्च कोटि की भावप्रवणता तथा भाषा का कसाव कवि के सामर्थ्य के द्योतक है.

२. सॉनेट -- गुलाबजी ने अंग्रेज़ी के 'सॉनेट' छंद का हिन्दी में प्रथम बार प्रयोग किया है. इससे अनजान लोगों ने त्रिलोचन शास्त्री को 'सॉनेट' के प्रवर्त्तक का नाम दे दिया. किसी ने उनकी पुस्तक खोलकर देखने का भी कष्ट नहीं किया कि वह गुलाबजी की पुस्तक के कितने समय बाद प्रकाशित हुई थी तथा जिन्हें 'सॉनेट' कहा जा रहा है वे सॉनेट की कसौटी पर खरे उतरते भी हैं या नहीं. 'सॉनेट' केवल छंद नहीं बल्कि अभिव्यक्ति की एक विधा है. केवल चौदह पंक्तियों की कविता 'सॉनेट' नहीं हो जाती. पंक्तियों में विशेष प्रकार से तुकांत का निर्वाह तथा अंतिम पंक्तियों में भाव का समाहार भी होना

चाहिए. त्रिलोचन शास्त्री की कविता में इन दोनों लक्षणों का अभाव होने से वे सॉनेट थे ही नहीं. गुलाबजी ने 'सॉनेट' को इतना साध लिया था कि गाँधीजी के देहावसान के समाचार से क्षुब्ध होकर उन्होंने दो रातों में ४६ सॉनेटों की रचना कर डाली जो अविकल रूप से **'गाँधी-भारती'** के नाम से छपे. यद्यपि उनका 'सॉनेट' को दिया गया हिन्दी नाम 'स्वानुभूति' प्रचलित नहीं हो पाया पर 'सॉनेट' सदा उनके लिए अभिव्यक्ति का स्वाभाविक प्रकार रहा है. इधर उन्होंने अंग्रेज़ी में भी कविताएँ की हैं तथा 'ओड' तथा 'सॉनेट' लिखे हैं ओ उनकी नव-प्रकाशित पुस्तक **'The Evening Rose'** में संकलित हैं.

३. ग़ज़ल -- गुलाबजी ने हिन्दी ग़ज़लों का सर्वप्रथम प्रवर्तन किया. यों तो ग़ज़ल को हिन्दी में ढालने का प्रयास काफी समय से किया जा रहा था किन्तु उर्दू की बहरों को हिन्दी भाषा में उतार लेने भर से ही हिन्दी ग़ज़ल नहीं बन जाती. हिन्दी का व्याकरण, हिन्दी की प्रतीक-योजना, बिम्ब-विधान, आधारभूत दर्शन को भी इसमें गूँथना आवश्यक था. गुलाबजी ने इस संतुलन को साधा तथा हिन्दी भाषा के साथ ग़ज़ल की आत्मा को भी हिन्दी में उतारा. तथा जिस प्रकार छायावादी कवियों ने हिन्दी-साहित्य को नई पदावली, अभिव्यक्ति के नए आयाम एवं नवल भावों की सूक्ष्मता दी, उसी प्रकार गुलाबजी ने भी अपनी ग़ज़लों के प्रयोग से हिन्दी में नई सम्भावनाओं का विस्तार किया. आज ग़ज़ल हिन्दी की एक प्रचलित विधा है तथा इसका काफ़ी श्रेय भारती के इस मूक साधक को जाता है.

गुलाबजी की लिखी ग़ज़ल की चार में से तीन पुस्तकें उत्तर प्रदेश द्वारा पुरस्कृत हुईं. इस प्रकार गुलाबजी ने न केवल हिन्दी में ग़ज़ल का प्रवर्तन करके हिन्दी-साहित्य को समृद्ध किया बल्कि अगले ग़ज़लकारों का मार्ग भी प्रशस्त किया.

कुछ लोगों ने दुष्यंत कुमार को हिन्दी ग़ज़ल का प्रवर्तक बताने का प्रयास किया किन्तु दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल की एकमात्र पुस्तक 'धूप में साए' का प्रकाशन गुलाबजी की ग़ज़ल-पुस्तक 'सौ गुलाब खिले' (१०८ ग़ज़लें, प्रकाशनवर्ष १९७३) के तीन वर्षों के बाद १९७६ में हुआ है. उनमें स्थान-स्थान पर हिन्दी में अस्वीकृत विशुद्ध उर्दू के शब्द तथा उर्दू व्याकरण के अनुसार शब्दों की इजाफत (दो शब्दों को मिलाना) रहने के कारण वे वे उर्दू ग़ज़लों से भिन्न नहीं रह पायी हैं.

४. **गीति-काव्य** -- सभी छायावादी कवियों ने सुन्दर गीत लिखे पर तत्सम बहुल शब्द-विन्यास तथा वायवीयता, अस्पष्टता आदि छायावादी दोषों से आच्छन्न इन गीतों के तार न तो लोक-मानस से जुड़ सके न गायन से. ये साहित्यिक गीत केवल कविता की एक शैली के रूप में ही ग्राह्य हो पाये. गायन के लिये अब भी मध्ययुगीन गीतों का सहारा लेना पड़ता था. इससे उत्प्रेरित होकर गुलाबजी ने गेय गीतों की परम्परा को पुन: प्रारम्भ करने का प्रयास किया .

इनके भक्ति-गीतों के दो संग्रहों **'भक्ति-गंगा'** तथा **'तिलक करें रघुबीर'** का उदघाटन १९९७ में **माननीय राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा** के कर-कमलों द्वारा हुआ था. इन गीतों की भाषा सरल, भाव सघन तथा दर्शन गहन है. इनमें गेयता के साथ ही विशिष्ट तथा सामान्य, दोनों जनों को लुभाने की क्षमता है. संगीत से बद्ध होकर बहुत से गीतों ने गुलाबजी के प्रयोग की सार्थकता को प्रमाणित किया है.

'गीत-वृन्दावन', 'सीता-वनवास' तथा **'गीत-रत्नावली'** -- इन तीन पुस्तकों में गुलाबजी ने कथा के तारतम्य को गेय गीतों में इस प्रकार बाँधा है कि उन्हें मंच पर गीति-नाट्य अथवा नृत्य-नाट्य के रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है. इस प्रकार ये तीनों पुस्तकें प्रबंध भी हैं तथा मुक्तक भी, दृश्य हैं

तथा श्रव्य भी, पाठ्य हैं तथा गेय भी. इनके कई गीत गाये तथा सराहे गये हैं तथा कई का मंच पर नृत्य के साथ प्रस्तुतिकरण भी हुआ है.

गीति-नाट्य 'बलि-निर्वास' ('दानवीर बलि') मिश्र काव्य अथवा गीति-नाट्य का विरल उदाहरण है. इसने परवर्ती साहित्य को काफ़ी प्रभावित किया है. दिनकर की उर्वशी से काफ़ी पूर्व की इस रचना का अप्सरा-प्रसंग द्रष्टव्य है.

इनके अतिरिक्त गुलाबजी ने **मसनवी**, **ओड**, **गड़ेरिये के गीत**, **प्रतीक-काव्य** आदि अनेक विधाओं के सफल प्रयोग किये.

अब प्रश्न है कि वे साहित्य की किस प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं. लगभग ७० वर्षों तक कविता की उपासना करनेवाले कवि से यह तो आशा नहीं की जा सकती है कि वह केवल एक प्रकार की ही कविता करेगा. गुलाबजी के भी हमें विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं. वे प्रबंधकार हैं तो गज़लकार और गीतकार भी. गुलाबजी छंदबद्ध काव्य में तो सिद्धहस्त हैं ही, छंदमुक्त काव्य में भी उतना ही अधिकार रखते हैं. खेमों में बँटी हुई दुनिया में स्वतन्त्रचेता गुलाबजी कभी प्रवाह के साथ नहीं चले, न कभी किसी गुट या वाद का सहारा ही लिया. उन्होंने सदैव नूतन प्रयोग किये. इस अर्थ में वे सच्चे प्रयोगवादी हैं तथा सदा प्रगति के पथ पर अग्रसर रहने से वे सच्चे अर्थ में प्रगतिवादी हैं.

श्रीमती पूर्ति मिश्रा के अनुसार, "१९४० से आजतक कदाचित ही कोई ऐसा हिन्दी साहित्य का पाठक, सम्पादक या समीक्षक होगा जिसने अद्‌भुत साहित्य-स्रष्टा श्री गुलाब खंडेलवाल की चर्चा या प्रशंसा न की हो."

आचार्य विश्वनाथ सिंह के शब्दों में –

"महाकवि गुलाब खंडेलवाल साहित्य की अजस्र मंदाकिनी प्रवाहित करनेवाले प्रथम कोटि के साहित्यकारों की पंक्ति में अग्रणी हैं. पिछले छः-

सात दशकों से प्रयाग, दिल्ली, बंबई, कोलकाता, मद्रास, भारत अमेरिका और कनाडा आदि देशों के साहित्यिक-सांस्कृतिक जीवन को गुलाबजी अपनी सारस्वत-साधना से गौरव-मंडित कर रहे हैं. अपनी निसर्ग-सहज प्रतिभा के नवोन्मेष से उन्होंने काव्य की विविध विधाओं में नवीन क्षितिजों का उद्घाटन किया है

. . .

उनकी प्रत्येक पुस्तक काव्य में किसी न किसी नवीन विधा की स्थापना करती है. प्रकृति और प्रेम की स्वच्छंद भावव्यंजना के गीत हों या देशभक्ति से अनुप्राणित सशक्त और प्रवाहपूर्ण दोहे और सॉनेट, जीवन की मार्मिक अनुभूतियों से नि:सृत गज़लें, रुबाइयाँ और मुक्तक हों अथवा गंभीर जीवन-दर्शन की विवृति करनेवाले खंडकाव्य, महाकाव्य और काव्यनाटक -- सर्वत्र गुलाबजी की प्रतिभा काव्य के नए आयामों का अनुसंधान करती चलती है. ग़ज़ल जैसी उर्दू की मँजी हुई विधा में उन्होंने हिन्दी के स्वीकृत सौन्दर्यबोध का अभिनिवेश करके संयम और सुरुचि की वृत्तरेखा के भीटर मार्मिक अनुभूतियों की उपलब्धि की है. उनका **'सौ गुलाब खिले'** हिन्दी की अपनी कही जाने योग्य स्तरीय ग़ज़लों का पहला संकलन है. इसके बाद उन्होंने **'पँखुरियाँ गुलाब की', 'कुछ और गुलाब', 'हर सुबह एक ताज़ा गुलाब'** जैसी अन्य कृतियों में ३६५ गज़लें लिखकर इस प्रयोग को पूर्णता तक पहुँचा दिया है. किशोर जीवन के रोमांटिक सौन्दर्यबोध से यात्रा आरम्भ करके जहाँ उनकी साधना शाश्वत जीवन-मूल्यों के आलोकवृत्त में केन्द्रित हुई है, वहीं उनकी कला ने छायावाद की स्वीकृत अभिव्यंजना-प्रणाली को मौलिक बिम्ब-विधान और विविध छंद-प्रयोगों से नया सामर्थ्य प्रदान किया है. प्रतिभा के सत्त्व और अभिव्यंजना की समृद्धि के विचार से छायावाद के कवि-चतुष्टय के बाद गुलाबजी हिन्दी के सबसे महत्त्वपूर्ण कवि हैं.

सुधी विद्वत्समाज से लेकर साधारण साहित्य-प्रेमियों तक उनके गीत और गज़लें आकाशवाणी से प्रसारित और सुगम संगीतकारों द्वारा प्रचारित होकर जनता का कंठहार हो रही है; गुलाबजी की ग़ज़लों में काव्य के व्यंजन के साथ जो संगीत का स्वर है तथा उनके गीतों में जो सहजता है वह आजकल की पाठ्य-अपाठ्य हिन्दी की कविता को काव्य की श्रव्यता प्रदान करने का सफल साधन है

. . .

पिछले दो दशकों से उन्होंने न केवल छंदमुक्त रचना के विविध प्रयोग ही किये हैं, तुलसी, सूर मीरा की भक्तिगीतों की धारा में प्राय: एक सहस्र गीतों का सृजन करके साहित्य से संगीत को पुन: जोड़ने का महान कार्य भी संपादित किया है. इसके अतिरिक्त गुलाबजी ने गीत-वृन्दावन, सीता-वनवास तथा गीत-रत्नावली जैसे गीति-काव्यों की रचना करके राधा, सीता और रत्नावली के जीवन की त्रासदी को भी नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है. इधर की ही लिखी उर्दू मसनवी की शैली में उनकी नवीन रचना, प्रीति न करियो कोय, हिन्दी के काव्य-साहित्य में एक नया आयाम जोड़ती है, जहां इस रचना द्वारा वे उर्दू के प्रमुख मसनवी-लेखक मीर हसन और दयाशंकर नसीम की श्रेणी में आ गये हैं वहीं अपने भक्तिगीतों की सुदीर्घ श्रृंखला द्वारा उन्होंने कबीर, सूर, तुलसी और मीरा की परम्परा में अपना स्थान सुराक्षित करा लिया है."

सन् २००८-९ में गुलाबजी ने अंग्रेज़ी में मौलिक कविताएँ लिखकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का एक नया रूप प्रस्तुत किया है. अपनी पुस्तक **'The Evening Rose'** की कविताओं द्वारा वे अंग्रेज़ी के रोमांटिक कवि कीट्स, बायरन, शेली आदि की परम्परा में भी आ गये हैं.

स्मृतियाँ: सम्मतियाँ

महादेवी वर्मा ने एक बार अफ़सोस जताते हुए कहा, "आपके साथ हिन्दीवालों ने न्याय नहीं किया!"

गुलाबजी के काव्य-पाठ को सुनकर वे बोलीं, "इसकी प्रत्येक पंक्ति में मेरी आँखों के सम्मुख एक-एक कर चित्र आते जा रहे थे." स्पष्टत: उनका संकेत गुलाबजी के काव्य की बिम्बात्मकता की ओर था.

कविता

बहुत-सी रचनाएँ, जो कविता की कोटि में आसानी से अपने दल खोल चुकी हैं, खुशबू से उन्माद, स्निग्ध कर देती हैं.

--महाकवि 'निराला'

भाव और भाषा का इतना सुन्दर सामन्जस्य कदाचित ही हिन्दी के किसी कवि ने इस अवस्था में किया हो.

--श्री 'बेढब' बनारसी

चाँदनी

कवि के हाथों में शब्द नाचते हुए आते हैं.

-- श्री 'बेढब' बनारसी

आभामय जगत का ऐसा मुग्धकारी वर्णन दूसरे स्थान पर कठिनाई से मिलेगा.

--श्री विश्वंभर 'मानव'

बलि-निर्वास

आप जन्मजात कवि हैं. 'बलि-निर्वास' की प्रथम पंक्ति ही, "यदि स्वर्ग कहीं है त्रिभुवन में तो वह मेरे ही उर में है," आपकी अद्‌भुत प्रतिभा का परिचय देती है तथा 'पद-विन्यासमात्रेण' की उक्ति को चरितार्थ करती है.

-- श्री मैथिलीशरण गुप्त

आपका बलि-निर्वास खूब है. मैंने और पंतजी ने उसे अत्यंत चाव से पढ़ा है. हम दोनों आपके परम प्रशंसक हैं.

--'बच्चन'

कच-देवयानी

आप खरे धनी हैं तभी तो आपने वाणी को इतने अलंकार दिये है कि उसे राजरानी बना देते हैं.

-- श्री मैथिलीशरण गुप्त

उषा

वृहत्काय या महाकाय कथाबंध में वास्तु (कथा)-गत स्वच्छंदता दिखाने का साहस हिन्दी के परम स्वतन्त्र प्रातिभ (जयशंकर प्रसाद) को भी नहीं हो सका. इस क्षेत्र में पूर्ण स्वतंत्रता से प्रविष्ट होने का साहसपूर्ण पदन्यास एक प्रकार से प्रतीक्षित था. यही कार्य आधुनिक हिन्दी-काव्यधारा में हमारे सुपरिचित प्रातिभ श्री गुलाब खंडेलवाल ने प्रस्तुत कृति 'उषा' में किया है.

--आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

मुक्तपंख कल्पना तथा गहन गंभीर अनुभूतियों का ऐसा अद्‌भुत परिपाक कम देखने को मिलता है. . . जीवन का ज्ञानपरुष गूढ सत्य इस काव्य में रस-तरल होकर हृदय को स्पर्श करने की क्षमता रखता है. गुलाब की सौन्दर्य-दृष्टि तथा काव्य-भावना आधुनिक है. उन्होंने काव्य की पंक्ति-पंक्ति में इतने अधिक एवं उच्च कोटि के उपादान भर दिये हैं कि उनसे सहज ही ऐसे चार और महाकाव्यों का प्रणयन हो सकता है. . . यदि मैं इस काव्य के कवित्व-वैभव के उदाहरण प्रस्तुत करूँ तो मुझे आधे से अधिक इसके छंदों को उद्‌धृत करना पडेगा. क्या प्रकृति-वर्णन, क्या मानव-भावनाओं की सूक्ष्म धूप-छाँह का चित्रण, सभी में कवि ने अपनी कला-क्षमता तथा शिल्पबोध से नया चमत्कार पैदा कर दिया है. मौलिक उपमाओं, उप्रेक्षाओं तथा लाक्षणिक बिम्ब-विधान के कारण इस काव्य में छायावाद के सर्वोत्तम उपकरणों का प्रचुर मात्रा में उपयोग हुआ है और उनमें कवि की मौलिक काव्यदृष्टि के कारण नये आयाम उदित हुये हैं.

--महाकवि सुमित्रानंदन पन्त

सौन्दर्य, प्रकृति-प्रेम, राष्ट्रीय भावना, युद्ध, जीवन के उत्थान-पतन तथा मानवीय मनोविकारों के जैसे वर्णन इन्होंने किये हैं, वे इनकी काव्य-प्रतिभा के परिचायक रहेंगे. भाव, भाषा, छंद और अलंकरण की यह श्रेष्ठता प्रारम्भ से लेकर अंत तक बनी हुई है. हृदय की सच्ची प्रेरणा, जीवन की गहरी अनुभूति, काव्य के प्रति अटूट लगन और श्रेष्ठ मानव-मूल्यों में आस्था होने से ही ऐसे ग्रंथों की रचना संभव होती है. प्रेम, त्याग और आदर्श के मूल्यों में विश्वास करना, नये गीतकार को प्रयोगवादी कवियों से पृथक् कर भारतीय संस्कृति के वाहक कवियों की पंक्ति में ला खडा करता है.

--श्री विश्वंभर 'मानव'

नयी कविता के कोलाहलपूर्ण वातावरण में महाकाव्य की परम्परा के प्रति आस्थावान कवि को हम बधाई देते हैं. कवित्व का परिपाक बड़ा ही रमणीय और मनोहारी है. इस महाकाव्य से परम्परा-प्रेमियों को भी आनंद प्राप्त होगा और नवीनता के आग्रहियों को भी.

--प्रो. देवेन्द्र नाथ शर्मा

रूप की धूप

'रूप की धूप' मुझे बहुत पसंद आयी. इसमें उर्दू के सामान, प्राय: उसी के छंदों में सहज ही प्रभाव डालनेवाली बेधक उक्तियाँ हैं, जो बहुत ही आकर्षक और प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त है.

--पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी

सचमुच गुलाब नहीं, आप तो खिले गुलाब हैं. आपकी विशेषता है -- निरंतरता, कि आप बिना मुरझाये खिलते रहे हैं. इस महक को मेरा प्यार-दुलार पहुंचे.

--श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

जब गंभीर साहित्य की चर्चा चलती है तो गुलाबजी के गीत सुना-सुनाकर मैं लोगों को चकित कर देता हूँ. मैं गुलाबजी को अपनी पीढ़ी का सर्वश्रेष्ठ कवि मानता हूँ.

-- पद्मभूषण डॉ रामकुमार वर्मा

समग्र रूप से 'रूप की धूप' अत्यंत सुहावनी है. जिस सौभाग्यशाली पर यह पड़ जायेगी, वह धन्य हो जाएगा.

--आचार्य सीताराम चतुर्वेदी

सौ गुलाब खिले

आपकी गुलाबबाड़ी की बहुत सैर करता हूँ. . . आपने हिन्दी में ग़ज़लों का बहुत ही सफल प्रयोग किया है और वह भी उर्दू से अलग रहकर. बहुत से शेर ग़ज़लों से हटकर मुहावरे बन गये हैं.

--श्री रायकृष्णदास

आपका आत्मविश्वास अद्‌भुत है. आप अपनी शैली के सम्राट् हैं.

-- श्री केदारनाथ मिश्र प्रभात

क्षेत्र के विशेषज्ञ देखें कि हिन्दी को यहाँ क्या मिला है और सहृदय शब्द-शब्द में स्पंदित हृदय की ध्वनि सुनें और अर्थ की बहुधा तरंगों का निरीक्षण करें.

-- श्री त्रिलोचन शास्त्री

गुलाब की बहुमुखी प्रतिभा का नव रूप, नव विक्कास, जन-रंजन भी और सज्जन प्रिय भी.

--'बच्चन'

आलोक-वृत्त

गुलाबजी छायावाद युग के कृती हैं अत: उनकी रचना में तथ्य भाव-समुद्र की तरंगों की तरह आते हैं. कहीं-कहीं कामायनी की पंक्तियों का स्मरण हो आना भी स्वाभाविक है.

--महादेवी वर्मा

पँखुरियाँ गुलाब की

गुलाबजी ने ग़ज़ल की आत्मा को पहचाना है और न केवल उर्दू ग़ज़लों का-सा सहज शब्द-विन्यास, बाँकपन और तेवर उनकी ग़ज़लों में मिलता है, बल्कि ग़ज़लों के अनुरूप वर्ण्य-विषय देने में तथा संप्रेषणीयता और भाव-प्रवाह उत्पन्न करने में भी वे खरे उतरे हैं. गुलाबजी ने उर्दू ग़ज़लों के मोहक रूप को सांगोपांग हिन्दी में उतारकर हिन्दी साहित्य की बहुत बड़ी सेवा की है.

--श्री गंगाशरण सिंह

(अध्यक्ष अ. भा. हिन्दी संस्था संघ)

इसकी प्रत्येक पंक्ति पठनीय ही नहीं स्मरणीय भी है.

--श्री शंकर दयाल सिंह (संसदसदस्य)

हिन्दी ग़ज़ल की इस विधा के अनुरूप वाणी, स्वर-सौरभ और एक स्तर के मूल्योत्कर्ष से विभूषित करनेवाले अग्रणी तो आप हैं ही, और पंक्ति भी आपकी ही बनायी है इसलिए प्रथम: कोई स्पर्धा निकट आती नहीं दिखती, इसलिये स्थान भी श्रद्धया सुरक्षित.

--श्री जगदीश पाण्डेय

(पू. अंग्रेज़ी विभागाध्यक्ष, जैन कॉलेज आरा)

ये गज़लें बहुआयामी हैं. इनमें कवि की आत्माभिव्यक्ति ही नहीं, आत्मसमर्पण भी है. लौकिक और आध्यात्मिक प्रेम की सार्थक अभिव्यक्ति इन ग़ज़लों की विशेषता है.

--साप्ताहिक 'आज'

अहल्या

कवि के शब्द-चयन, उसके भाषा के अधिकार, सुन्दर वर्णमैत्री और अभिव्यक्ति की सामर्थ्य ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया है. प्रांजल और संस्कृतनिष्ठ होते हुये भी कहीं भी मुझे क्लिष्टता नहीं दीख पड़ी. भाषा पर कवि का साधारण अधिकार है. इस काव्य का प्रकाशन एक 'घटना' है, और मुझे विश्वास है कि यह काव्य कालान्तर में हिन्दी का एक गौरव-काव्य माना जायेगा.

--पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी

जिस विषय पर पुराणों से लेकर आधुनिक काल तक अनेक महान कलाकारों ने लिखा है, उसपर कुछ नया या नये ढंग से लिखना आसान नहीं है. लेकिन इस दुष्कर कार्य का सम्पादन गुलाबजी ने बहुत सफलता के साथ किया है.

--श्री गंगाशरण सिंह
(अध्यक्ष अ. भा. हिन्दी संस्था संघ)

विविध

गुलाबजी नैसर्गिक कवि हैं, इसलिये उन्होंने जीवन और प्रकृति के सूक्ष्म तंतुओं को समझा है, उन्हें काव्य में उतारा है.

--श्री रायकृष्णदास

गुलाबजी की कल्पना की अनूठी उड़ान, भाषा की नैसर्गिक छटा तथा भावनाओं की सुकुमारता अनायास ही श्री जयशंकर प्रसाद की उत्कृष्ट शैली का स्मरण दिलाती है. तथापि उनकी काव्यधारा वर्तमान जीवन तथा समाज

की यथार्थ परिस्थितियों से पृथक् न होकर उनसे तादात्म्य स्थापित करने में समर्थ है.

--श्री महेश नारायण शुक्ल

(पू. मुख्य न्यायमूर्ति, इलाहाबाद उच्च न्यायालय)

आपकी प्रतिभा ने अनेक रूपात्मक विकास कर लिया है. आप हिन्दी के परम समर्थ कवि हो गये हैं, इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है.

--आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

'विनयपत्रिका' के तुलसी की तरह 'सब कुछ कृष्णार्पणं' का कवि भी अपने प्रभु से साक्षात वार्तालाप करता-सा प्रतीत होता है.

--पं. विष्णुकांत शास्त्री

(पू. अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कोलकाता वि.विद्यालय)

(राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश)

'शब्दों से परे' में गोचर से अगोचर की ओर एक प्रच्छन्न प्रस्थान है. कहीं-कहीं कवि का अंतर्मन महाशून्य के द्वार पर दस्तकें देता हुआ दिखता है.

--डॉ. कुमार विमल

गुलाबजी की कृति 'हम तो गाकर मुक्त हुये' ने समसामयिक हिन्दी साहित्य को शाश्वत भाव-विभूति प्रदान की है.

--डॉ. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह

(पू. अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, मगध वि.विद्यालय)

हिन्दी कविता में ग़ज़ल के प्रयोग की चेष्टा अनेक बार की गयी है परन्तु गुलाबजी को 'कुछ और गुलाब' नामक काव्य संग्रह में इस दिशा में अभूतपूर्व सफलता मिली है.

--श्री महेश नारायण शुक्ल
(पू. मुख्य न्यायमूर्ति, इलाहाबाद उच्च न्यायालय)

अव्यक्त का व्यक्तिकरण और कवि का उसके साथ भाव-विनिमय, यही 'व्यक्ति बनाकर आ' का मूल स्वर है. भाव और शिल्प का विरल संतुलन ही इस काव्य की उपलब्धि है.

--आचार्य विश्वनाथ सिंह

'बूँदें जो मोती बन गयीं' ऐसी बूँदों का संकलन है जो मोती बन गयी हैं, इन कविताओं में संवेदना का नवोन्मेष बिम्ब-विधान की मौलिकता का आश्रय लेकर नूतन काव्य-शिल्प में व्यक्त हुआ है.

--आचार्य विश्वनाथ सिंह

आश्चर्य है, गुलाबजी का कवि हमेशा कितना तरुण है. वह सतत नये-नये रूपों में, नयी भंगिमा लिये, अपने नयी अदा लेकर उपस्थित होता है. रचना का वैविध्य, कवि का निजी वैशिष्ट्य है. यह इस प्रतिभा-पुत्र, सहृदय का हमारे साहित्य को एक अनवद्य वर है.

--पं. अक्षयचंद्र शर्मा

श्री खंडेलवाल की प्राय: आधी शती की काव्य-साधना में काव्य की जो विविधता है और कहीं-कहीं जो ऊँचाई देखने में आती है, वह आश्चर्यजनक है.

--पद्मभूषण पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी

ग़ज़ल की रवानी, गीतों की संपन्न अनुभूति एवं नाट्य-कृतियों के-से संवाद स्वाभाविक भाषा एवं सहज संवेद्य शैली में 'चन्दन की कलम शहद में डुबो-डुबोकर' में आये हैं. सफल कृति के लिये सफल सर्जक के प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं आह्लाद के भाव-सुमन अर्पित करता हूँ.

-- डॉ. हंसराज त्रिपाठी
(तिलक डिग्री कॉलेज, प्रतापगढ़, उ. प्र.)

गुलाबजी की कृति कितने जीवन कितनी बार हिन्दी के आधुनिक गीत-साहित्य को संगीत से जोड़ने का सफल प्रयास है. अपनी प्रौढ़ता, सरलता एवं गहन भावानुभूति के कारण यह रचना हिन्दी-साहित्य की श्रेष्ठतम कृतियों में गिनी जायेगी.

--डॉ. शंभुशरण सिन्हा
कॉमर्स कॉलेज, पटना

यदि गुलाबजी ने और कुछ भी न लिखकर केवल 'गीत-वृन्दावन' और 'सीता-वनवास' की रचना की होती तो भी हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवियों में उनकी गणना होती.

--श्री इन्दुकांत शुक्ल
(यु. एस. ए.)

गुलाबजी ने अपने काव्य द्वारा सारे बिहार का मुख उज्जवल कर दिया है.

--'दिनकर'

Gulab Khandelwal's poems reminds us of passages from Tagore, specially where he addresses the Divine Father with moving sincerity and deep feeling.

--Dr. Karan Singh
(Ex Sadre Riyasat of Jammu & Kashmir,
Ex- Cabinet Minister in Indian Government)

महाकवि गुलाब खंडेलवाल की कालजयी कृतियाँ

पुस्तकें	भूमिका-लेखक
1. कविता (1939-41)	महाकवि 'निराला'
2. चाँदनी (1940-44)	श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ 'बेढब बनारसी'
3. बलि-निर्वास (1943) (काव्य-नाटक, चम्पू काव्य)	श्री एन. वी. कृष्णवारियर
4. कच-देवयानी(1944-45) (खंड-काव्य)	स्वयं
5. उषा (महाकाव्य) (1945-47)	महाकवि सुमित्रानन्दन पंत तथा आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
6. अहल्या (1948-50) (खंड-काव्य)	पद्मभूषण पं श्रीनारायण चतुर्वेदी तथा माननीय श्री गंगाशरण सिंह पू. संसद सदस्य
7. मेरे भारत, मेरे स्वदेश (1962)	स्वयं
8. रूप की धूप (1960-70)	पं. सीताराम चतुर्वेदी
9. सौ गुलाब खिले (ग़ज़ल)(1970-73)	श्री त्रिलोचन शास्त्री
10. आलोकवृत्त (1968-73) (खंड-काव्य)	श्रीमती महादेवी वर्मा
11. गाँधी-भारती (1948) (सॉनेट)	स्वयं

12. पँखुरियाँ गुलाब की (ग़ज़ल)(1973-74)	स्वयं
13. सीपी-रचित रेत (1941-46)	स्वयं
14. कुछ और गुलाब (ग़ज़ल) (1977-80)	माननीय श्री महेशनारायण शुक्ल पू. मुख्य न्यायमूर्ति, एलाहाबाद हाईकोर्ट
15. नूपुर बँधे चरण (1940-51)	श्री नथमल केड़िया
16. आयु बनी प्रस्तावना (1949-71)	स्वयं
17. शब्दों से परे (1941-82)	डॉ. राजेश्वर सहाय त्रिपाठी ऐडवोकेट
18. व्यक्ति बनकर आ (1981-82)	आचार्य विश्वनाथ सिंह
19. कुंकुम के छींटे (1965-70)	स्वयं
20. बूँदें जो मोती बन गयीं (1981-82)	स्वयं
21. हर सुबह एक ताज़ा गुलाब (ग़ज़ल) (1978-81)	आचार्य विश्वनाथ सिंह
22. कस्तूरी कुंडल बसे (1982)	स्वयं
23. राजराजेश्वर अशोक (नाटक) (1961)	पं. सीताराम चतुर्वेदी
24. भूल (नाटक) (1949)	स्वयं
25. सब कुछ कृष्णार्पणं (1983-85)	पं विष्णुकान्त शास्त्री पू. हिन्दी विभागाध्यक्ष, कलकत्ता विश्वविद्यालय
26. ऊसर का फूल (1940-50)	कवि श्री इम्तियाज़ुद्दीन खां
27. नये प्रभात की अँगड़ाइयाँ (1980-83)	पं. अक्षयचन्द शर्मा

28. चन्दन की कलम शहद में डुबो-डुबोकर (1947-83)	डॉ. हंसराज त्रिपाठी
29. आधुनिक कवि --१९ गुलाब खंडेलवाल (1941-84)	डॉ. प्रेमनारायण शुक्ल
30. हम तो गाकर मुक्त हुए (1986-87)	डॉ. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह
31. Selected poems of Gulab Khandelwal (1983)	Dr. Karan Singh Ex M.P. & Ex Prince of Kashmir
32. कितने जीवन कितनी बार(1988)	स्वयं
33. नाव सिंधु में छोड़ी (1991)	पद्मश्री क्षेमचन्द्र 'सुमन'
34. गीत-वृन्दावन (1971)	डॉ. शम्भुशरण सिन्हा
35. सीता-वनवास (1991-92)	स्वयं
36. तिलक करें रघुबीर(1994)	श्री छोटेनारायण शर्मा
37. प्रेम-कालिंदी(1941-77)	स्वयं
38. भक्ति-गंगा(1983-97)	श्री लक्ष्मी नारायण शर्मा
39. भावों का राजकुमार (1943- 97)	स्वयं
40. देश विराना है (1941-97)	स्वयं
41. प्रीति न करियो कोय (1994)	श्री गुलज़ार देहलवी तथा श्री इम्तियाज़ुद्दीन खां
42. प्रेम-वीणा (1941-96)	स्वयं
43. नहीं विराम लिया है (1998-99)	स्वयं
44. अंत:सलिला (1941-96)	स्वयं
45. तुझे पाया अपने को खोकर (1999-2000)	स्वयं

46. करुणा-त्रिवेणी (1991-92) डॉ. शम्भुशरण सिन्हा,
(गीत-वृन्दावन, सीता-वनवास, गीत-रत्नावली) श्री वासुदेव पोद्दार
तथा स्वयं

47. गुलाब ग्रंथावली(परिवर्धित संस्करण)
खंड एक भाग एक (1941-2000) पद्मभूषण पं. श्रीनारायणचतुर्वेदी
तथा आचार्य विश्वनाथ सिंह

48. गुलाब ग्रंथावली (परिवर्धित संस्करण)
खंड एक भाग दो (1983-2000) पद्मभूषण पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी
तथा आचार्य विश्वनाथ सिंह

49. गुलाब ग्रंथावली (परिवर्धित संस्करण)
खंड दो(1983-2000) पद्मभूषण पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी
तथा आचार्य विश्वनाथ सिंह

50. गुलाब ग्रंथावली (परिवर्धित संस्करण)
खंड तीन(1941-2000) पद्मभूषण पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी
तथा आचार्य विश्वनाथ सिंह

51. गुलाब ग्रंथावली (परिवर्धित संस्करण)
खंड चार (1941-2000) पद्मभूषण पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी
तथा आचार्य विश्वनाथ सिंह

52. गुलाब ग्रंथावली श्रीमती प्रतिभा खंडेलवाल
खंड पाँच (2000-2010) श्रीमती विभा झालानी

53. गुलाब ग्रंथावली	श्रीमती प्रतिभा खंडेलवाल
खंड छः (2000-2010)	श्रीमती विभा झालानी
54. ज़िंदगी है, कोई किताब नहीं	स्वयं
(आत्मकथा) (2007)	
55. दिया जग को तुझसे जो पाया	श्री मुरारीलाल त्यागी
(2000-03)	तथा डॉ. मनोहरलाल शर्मा
(देहली का पत्थर, पत्र-पुष्प)	
56. मेरे गीत तुम्हारा स्वर हो	स्वयं
(2005-06)	
57. कालजयी (1948-2006)	प्राचार्य विश्वनाथ सिंह
58. ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया	स्वयं
(2007-2008)	
59. कागज़ की नाव(2008)	स्वयं
60. The Evening Rose (2009-10)	स्वयं
61. अनबिंधे मोती (1941-83)	स्वयं
62. मेरी उर्दू ग़ज़लें (1950-55)	स्वयं
63. गुलिवर की चौथी यात्रा (2010)	श्रीमती प्रतिभा खंडेलवाल

Literary Bio-data of Poet Gulab Khandelwal

Gulab Khandelwal was born in the town of Navalgarh, Rajasthan (India) on 21st of Feb 1924. He had had his early education at Gaya, Bihar, (India). He graduated from Banaras Hindu University, Banaras, U.P. (India) in 1943. In Banaras, he came into contact with the great luminaries of Hindi Literature and his inborn poetic faculty matured. His first volume of poems was published in 1941 with the preface by the famous poet 'Nirala'. Since then, more than 58 volumes of his poems and 2 dramatic works and his autobiography in prose have been published. He has written in the different forms of poetry such as **Lyrics, Sonnets, Rubais, Dohas, Odes, Elegies, Lyrical Ballads, Epics, Poetic Dramas, Ghazels, Masnavi** etc, with equal felicity. He had even introduced some of these forms into Hindi Literature, Gazel being one of them. He had written poems in Hindi, urdu and English with equal felicity.

Awards:

Six of his books were awarded by

U.P. Government, India

1. ***Usha*** – by **U.P. Government,**
   - in **1967**
2. ***Roop kee dhoop*** – by **U.P. Government,**
   - in **1971**
3. ***Sou gulab khile*** – by **U.P. Government**
   - in **1975**
4. ***Kuch Our Gulab*** – by **U.P. Government**
   - in **1980**
5. ***Ahalya*** - Vishisht puraskaar
   -by **U.P. Government** in **1980**

6. ***Har Subah Ek Taazaa Gulab***
   - by **U.P. Nirala puraskar**,in **1989**

7. ***Adhunik Kavi-19*** – **Bihar Government,**
   Akhil Bharatiy Granth Puraskar

8. ***Ahalya*** – by **Hanuman Mandir Trusht,**
   Kolkata, Akhil bharatiy Rambhakti Puraskar
   -in **1984**

Gulab Khandelwal's books selected as text books for collages:

1. Kach devyani (Khandkavy) - Had been -in Intermediate in Magadh University, Bihar (India)

2. Usha (Mahakavy) - Had been- in B.A. in Magadh university, Bihar (India)

3. Ahalya (Khandkavy) - Had been -in Intermediate classes in U.P. and B.A. in Bihar (India)

4. Ahalya (Khandkavy) - Had been- in B.A. in Magadh University, Bihar (India)

5. Alok-Vritt (Khandkavy) – Had been – in B.A. in magadh University, Bihar (India)

6. Alok-Vritt (Khandkavy) – **is** – in Intermediate in Uttar Pradesh (India) since 1976

Research:

A Dissertation For M.A. was presented by **Mukul Khadelwal** in **1968** from **Magadh University** and **two dissertations** were presented at **Awadh University**

Decree of Ph. D awarded to several persons on his literature.

1. Sagar University, Madhya Pradesh

to **Yashvant Singh** in **1966**

2. Magadh University, Bihar

to **Ravindra Ray** in **1985**

3. Meerut University, U.P.

to **Vishnu Prakaash Mishra** in **1992**

4. Ruhelkhand University, U.P.

to **Poorti Avasthi** in **1994**

5. Mahatma Jyotiba Phule University, U.P.

to **Snehkumare Kannojiya** in **2006**

6. Kurukshetra University, Haryana – Raj Yadav – under the guidance of Shree Ramapati Singh, in **2008**

7. Awadh university, U.P. – to Ankita Mishra in **2011**

to **Ankita Mishraa** in **2011**

Recognition:

U.S. and Canada

1. Gulab Khandelwal was awarded the **Honorary Citizenship** of **Baltimore City (U.S.A.)** on **13th July 85** *"for his achievements and eminent gifts to our times."*

2. He was awarded the **Vishisht Sahitya Padak** (***Special Literary Award***) by the **International Hindi Samiti, Washington D.C. (U.S.A.)** on **6th Dec 1986**.

This day was declared as **Hindi Day** in the entire state by the **Governor** of **Maryland (U.S.A.)**. The **Mayor of Baltimore** also declared this day as **Hindi Day in** the City of **Baltimore**.

3. On **Republic day celebration of India, 2006**, celebrated in **Washington D.C. (U.S.A.)**, he was honored and bestowed as **'Kavi Samrat'** by the **Governor of Maryland, U.S.A.**

4. He has been honored by **Hindi Parishad Toronto** and **Edmonton (Canada)** and has been honored by numerous literary and non-literary institutions in **India and U.S.A.**

He mostly lives in U.S.A. but visits India every year and is still active in his literary pursuit.

India

1. Gulabji was felicitated by **Uttar Pradesh Sahitya Sammelan** in **1979.**

2. He had been conferred the highest honor of **Sahitya Vachaspati** (*equivalent to the degree of Ph. D.*), by **Akhil Bharateey Hindi Sahity Sammelan,** under the president-ship of **Padma Bhooshan Dr. Ram Kumar Verma**, in **1989**,

3. His two books – ***Bhakti-Ganga*** and ***Tilak Kare Raghubeer*** were released by **The President of India,** respected **Shree Shankardayal Sharma** in **1997.**

4. He was felicitated jointly by The Governor of U. P., Shree Vishnukant Shastri, Chief Minister of U. P., Shree Mulayam Singh

Yadav, Murari bapoo and Ex Attorney general Shree Shantibhooshan in Itawa in **2001.**

He has been the senior member of the editorial board of 'Vishwa' a tri-monthly literary magazine published in Hindi in U. S. A. He is currently the president of International Hindi Samiti of U.S.A.

His poetry is unparalleled in quality and quantity both. The full potential of his poetic work is yet to be discovered. He is still active after producing more than fifty volumes of poetry.